2

मधुर वचन

दोहे

कबीरदास

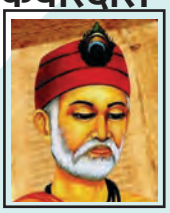

ऐसी बाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
अपना तन सीतल करैं, औरन को सुख होय॥

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय॥

» विश्लेषण करें :

- 'वाणी से तन-मन को शांत किया जा सकता है' –क्या आप इस कथन से सहमत हैं? क्यों?
- औरों को हम कैसे सुख दिला सकते हैं?
- इन पंक्तियों से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?
- कबीर ने सज्जन की तुलना सूप से की है। क्यों?

तुलसीदास

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब तक घट में प्राण॥

सचिव वैद्य गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास॥

» विश्लेषण करें :

- 'दया धर्म का मूल है' –क्या आप इस कथन से सहमत हैं, क्यों?
- 'कभी भी दया न छोड़िये' –कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?
- 'राज, धर्म, तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास' –इससे क्या तात्पर्य है?

रहीम

मन मोती अरु दूध रस, इनकी सहज सुभाय।
फट जाये तो ना मिले, कोटिन करो उपाय ॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पै फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय ॥

» विश्लेषण करें :

- "फट जाये तो ना मिले' –इससे आप क्या समझते हैं?
- इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं?
- 'झटके से मत तोड़ना'-इसके समान आशय वाली पंक्ति चुन लें।
- 'टूटे पै फिर ना जुरे'-ऐसा क्यों कहा होगा?

कबीरदास

कबीरदास का जन्म स्थान काशी माना जाता है। वे मध्यकालीन भारत के भक्त कवि एवं समाज सुधारक थे। साधना के क्षेत्र में वे युग-युग के गुरु थे, उन्होंने संत काव्य का पथ प्रदर्शन कर साहित्य क्षेत्र में नव निर्माण किया था। साखी, सबद और रमैनी उनकी मुख्य रचनाएँ हैं।

तुलसीदास

तुलसीदास मध्यकालीन हिंदी साहित्य के महान रामभक्त कवि थे। उन्होंने रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की है।

अब्दुर्रहीम खानखाना

अब्दुर्रहीम खानखाना भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में एक थे। उनका जन्म दिल्ली में हुआ। व्यावहारिक और सरल ब्रजभाषा के प्रयोग के ज़रिए काव्य में भक्ति, नीति, प्रेम आदि के लिए वे स्मरणीय हैं। रहीम दोहावली, बरवै आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

गतिविधियाँ

» **सही मिलान करें :**

बाणी	शीतल
आपा	तीनों
सीतल	अहंभाव
तीनि	नाश
नास	तोड़ो
तोरो	आशा
जुरे	जुड़े
आस	वाणी

» **इन आशय वाली पंक्तियों को दोहों से छाँटकर लिखें।**

क) हमें अपने शरीर में प्राण रहते तक दयाभाव को त्यागना नहीं चाहिए।

ख) सार्थक बातों को अपनाना चाहिए और बेकार की बातों को छोड़ देना चाहिए।

ग) अगर प्रेम का धागा एक बार टूट जाए, तो फिर इसे जोड़ना मुश्किल होता है। अगर जुड़ भी जाए, तो उसमें गाँठ पड़ जाती है।

» **पठित दोहों का आशय लिखें।**

» **दोहों का आलाप करें।**

अनुबद्ध कार्य

- दोहों का आलाप करके ऑडियो बुक निकालें।

मदद लें :

बाणी - वचन

आपा - अहंभाव

खोय - त्यागना

मन का आपा खोय - अहंभाव छोड़ना

तन - शरीर

सीतल करना - शीतल करना

औरन को - औरों को

सुख होय - सुख हो जाए

सूप - മുറം, riddle, முறம், ಮುರಾಮ್

सुभाय - स्वभाव

गहि रहै - ग्रहण करे

थोथा - सारहीन

सचिव - मंत्री

तीनि - तीनों

जौं - यदि

प्रिय बोलहिं - मीठे बोलने से

आस - आशा

होय - होता है

बेगिहीं - जल्दी से

नास - नाश

अरु - फूल

कोटिन - करोड़ों

धागा - ചരട്, String, கயிறு, ದಾರ

मत तोरो चटकाय - झटके से मत तोड़ना, പെട്ടെന്ന് പൊട്ടിക്കരുത്, Don't break hastily, எளிதில் கக்கூடாது, ಬೇಗನೆ ತುಂಡು ಮಾಡಬಾರದು

टूटे पै - टूटने पर

ना जुरे - नहीं जुड़ता है

गाँठ - കെട്ട്, Knot, முடிச்சு, ಗಂಟು

परी जाय - पड़ जाता है